किताबें मिलीं

मनोज मोहन

गिरधर राठी कवि, आलोचक और अनुवादक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। *साहित्य के इर्द-गिर्द* शृंखला में उनके सृजन को चार भागों में प्रकाशित किया गया है। शृंखला की पहली कड़ी *कल, आज, और कल* में उनके अब तक के लिखे वैचारिक लेख संगृहीत हैं। दूसरी कड़ी *सोच-विचार* में साहित्य, भाषा, चित्रकला, नाटक और सिनेमा से संबंधित लेख हैं। तीसरी कड़ी *कथा-संसार: कुछ झलकियाँ* में उनकी कथा-आलोचना का परिचय मिलता है। अंतिम और चौथी कड़ी *कविता का फ़िलहाल* में उनके कविता पर एकाग्र लेख हैं।

कल, आज, और कल : सोच-विचार
कथा-संसार : कुछ झलकियाँ
कविता का फ़िलहाल
गिरधर राठी
संभावना प्रकाशन, हापुड़
मूल्य : 220 रु., पृष्ठ : 194;
मूल्य : 275 रु., पृष्ठ : 274;
मूल्य : 290 रु., पृष्ठ : 240

लोहिया संचयिता के पहले खण्ड में समाजवाद तथा वैकल्पिक राजनीति से संबंधित लेख हैं। इस खण्ड में उनकी प्रसिद्ध किताब *व्हील ऑफ़ हिस्ट्री* के तीन महत्त्वपूर्ण अंश भी हैं। दूसरा खण्ड लोहिया के जीवन-संबंधी दृष्टिकोण एवं समाजवादी राजनीति का परिचय देता है। तीसरे खण्ड में लोहिया के सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन, ख़ास तौर पर धर्म एवं दर्शन संबंधी विचारों का परिचय मिलता है। बाक़ी खण्डों में उनके विशिष्ट फुटकर लेख संगृहीत हैं।

लोहिया संचयिता
के. विक्रम राव और प्रदीप कुमार सिंह
अनामिका प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 450 रु., पृष्ठ : 574

हमारी चुनौतियाँ में पाँच विद्वानों के विमर्शपरक व्याख्यान शामिल हैं। यह किताब गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद द्वारा आयोजित लोकप्रिय शृंखला 'भारतीय समाज के समक्ष चुनौतियाँ' के अंतर्गत दिये गये व्याख्यानों का संग्रह है। पुस्तक में संरक्षणवादी नज़रिये तथा आधुनिक-लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य का स्वस्थ संवाद दिखाई देता है। सम्पादक-द्वय के अनुसार यह पुस्तक हमारे दौर की विभिन्न सामयिक चुनौतियों का सामना करने में मदद करेगी।

हमारी चुनौतियाँ
बद्री नारायण एवं सुनीत सिंह (सं.)
राजकमल प्रकाशन , नयी दिल्ली
मूल्य : 395 रु., पृष्ठ : 120

अभय कुमार दुबे की यह रचना *हिंदू-एकता बनाम ज्ञान की राजनीति* में मध्यमार्गी विमर्श (वाम-सेकुलर-उदारतावादी विमर्श) की विफलताओं की चर्चा की गयी है। यह किताब एक दीर्घ निबंध है, जिसके पाँच हिस्से हैं। पहले हिस्से में आज के घटनाक्रम की रोशनी में हिंदुत्ववादी एकता के इतिहास को अलग ढंग से देखने की कोशिश है। दूसरे हिस्से में मध्यमार्गी विमर्श के मुखर हिस्से पर रोशनी डाली गयी है, तो तीसरे भाग में उसी विमर्श के मौन हिस्से के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या है जिसे ज्ञान की चतुराईपूर्ण राजनीति के तहत पृष्ठभूमि में डाल दिया गया है। पुस्तक के चौथे हिस्से में ब्राह्मणवाद और सामासिक संस्कृति की अवधारणा के साथ-साथ ग़ैर-भाजपा शक्तियों की साम्प्रदायिक राजनीति की उपेक्षा के रवैये पर विचार किया गया है।

हिंदू-एकता बनाम ज्ञान की राजनीति
अभय कुमार दुबे
सीएसडीएस-वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 250 रु., पृष्ठ : 278

दलित सशक्तिकरण : सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण भारतीय समाज में मानव-विकास में अंतर-सामाजिक असमानताओं तथा सामाजिक रूप से वंचित समूहों के बहिष्कार के मुद्दों पर केंद्रित है। यह किताब हाशिये के सामाजिक समूहों के सामने आनेवाली चुनौतियों से निपटने के लिए नीतियाँ बनाने में मददगार सिद्ध होगी। इस किताब का सम्पादन सुखदेव थोरात और निधि सदाना सभरवाल ने किया है।

दलित सशक्तिकरण : सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण
सुखदेव थोरात और निधि सदाना सभरवाल
सेज प्रकाशन, नयी दिल्ली,
मूल्य : 645 रु., पृष्ठ : 302
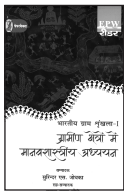
वाणी प्रकाशन और *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली* की महत्त्वाकांक्षी योजना के तहत *भारतीय ग्राम शृंखला* के तीन खण्डों की इस पुस्तक-त्रयी में शामिल सभी लेख अनूदित हैं। पहले खण्ड में ग्रामीण क्षेत्रों में मानवशास्त्रीय अध्ययन से संबंधित लेख हैं, दूसरे खण्ड में ग्रामीण विकास के परिप्रेक्ष्य, नीतियों और कार्यक्रमों पर फ़ोकस किया गया है। तीसरे खण्ड में ग्रामीण परिवेश के बदलते सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृश्य पर केंद्रित लेख हैं। ये तीनों खण्ड समकालीन ग्रामीण भारत के विभिन्न आयामों का एक गहन और विश्लेषणपरक मानचित्र प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय ग्राम शृंखला— *ग्रामीण क्षेत्रों में मानवशास्त्रीय अध्ययन*; *ग्रामीण विकास : परिप्रेक्ष्य, नीतियाँ और कार्यक्रम*; *ग्रामीण परिवेश का बदलता जीवन : सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य*
सम्पादक : सुरिन्दर एस. जोधका,
सह-सम्पादक : कमल नयन चौबे
वाणी प्रकाशन, *ईपीडब्ल्यू* और टाटा ट्रस्ट
मूल्य : 325 रु., पृष्ठ : 232;
मूल्य : 350 रु., पृष्ठ : 294;
मूल्य : 399 रु., पृष्ठ : 384

शम्सुल इस्लाम की यह किताब *भारत- विभाजन विरोधी मुसलमान : देशप्रेमी मुसलमानों की अनकही दास्तान* भारत की मुस्लिम आबादी के उस बड़े हिस्से के बारे में है जो विभाजन के पक्ष में नहीं था। पुस्तक में कुल दस अध्याय हैं। यह किताब इस आम धारणा का खण्डन करती है कि मुसलमान पाकिस्तान की माँग कर रहे थे और हिंदू अखण्ड भारत की माँग पर अड़े थे। भारत के विभाजन और मुस्लिम समुदाय के नज़रिये को समझने के लिए यह किताब ज़रूरी दस्तावेज़ है।

भारत-विभाजन विरोधी मुसलमान : देशप्रेमी मुसलमानों की अनकही दास्तान
शम्सुल इस्लाम
फ़ारोस, नयी दिल्ली
मूल्य : 300 रु., पृष्ठ : 288

रेत पर पिरामिड : गांधी-एक पुनर्विचार के तेईस अध्यायों में लेखक कनक तिवारी ने गाँधी के विचार और कर्म के अल्पचर्चित पहलुओं पर दृष्टिपात किया है। महात्मा गाँधी को इस बात का पछतावा था कि उन्होंने अपने जीवन में आदिवासियों के लिए कुछ नहीं किया। इसलिए, उन्होंने ठक्कर बाबा को आदिवासियों के बीच काम करने के लिए प्रेरित किया था। पुस्तक गाँधी से संबंधित कतिपय किंवदंतियों का भी निराकरण करती है। अपनी भूमिका में विनोद शाही इस किताब को गाँधी और उनके स्वराज का पुनर्पाठ बताते हैं।

रेत पर पिरामिड : गाँधी— एक पुनर्विचार
कनक तिवारी
आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा)
मूल्य : 295 रु., पृष्ठ : 280